बसंत साव
की
कविताएँ

घर की चारदीवारी
गांव की सरहद
इतने भर से सिरजती है
उनकी अपनी निश्छल दुनिया
लेकिन खींच ले गई उन्हें बलात
उन्मादी भेड़ियों की भीड़
मूकदर्शक बनी रहीं
रखवाली की जिम्मेदार वर्दियां
नपुंसक वर्दियां
बहती रही रक्त की धार
अस्मतें होती रहीं तार-तार
सड़कों, खेतों में
लुटी हुई देहों का
निर्लज्ज नग्न प्रदर्शन
वीडियो बनाती रहीं
तमाशबीन आंखें
द्वापर के बाद
एक बार फिर कलंकित
हो गया मानवता का इतिहास
निष्ठुर हवाएं निगलती रहीं
दो कूकी कोयलों की कूक
अनुत्तरित होता रहा
आर्तनाद
अबकी बार नही बचा सका
कोई कृष्ण
भारी पड़ा
दुस्शासनों , दुर्योधनों का हुजूम
बहरे समय के कानों के लिए
निरर्थक सिद्ध होता रहा
अबकी बरस हम ऐसी दीवाली मनाएं...

कोई जन भूखा न रहे, ऐसी हो दीवाली,
चेहरे पर बिखरी हो मुस्कान, छाई हो खुशहाली।

ईर्ष्या और नफरत हम तज दें, प्रेम का दीप जलाएं,
अज्ञान, आडम्बर और कुरीतियाँ, सारे जहाँ से मिटाएं।
अबकी बरस हम सब मिलकर ऐसी दीवाली मनाएं...

प्लास्टिक का न करें प्रयोग, हम दृढ़ संकल्पित हो जाएं,
पटाखों को बिल्कुल न जलाएं, प्रदूषण न फैलाएं,
किसान न डूबने न पाएं कर्ज में, खेतों में फसल लहलहाएं,
चाहे जिस कारण से परिजन हों रूठे, उन्हें पुकार लगाएं।
अबकी बरस हम सब मिलजुलकर ऐसी दीवाली मनाएं...

सबके शुभ की हम करें कामना, सर्वहित की हो भावना,
दीन-दुखी के लिए हृदय में पनपे, सदैव ही सद्भावना।
जाति-पांति और धर्म का, हम न विद्वेष फैलाएं,
मानवता का परचम फैलाकर, नई इबारत लिख जाएं।
अबकी बरस हम सब मिलकर ऐसी दीवाली मनाएं...

मन में तरंग, मन में उमंग, किसी की न हो काली रात,
इस दीवाली में सबको मिले, खुशियों की सौगात।
दुख के बादल यदि आएं, वो झटपट ही छंट जाएं,
उनको भी खुशियाँ मिल जाएं, जिनके चेहरे हों मुरझाएं।
अबकी बरस हम सब मिलजुलकर ऐसी दीवाली मनाएं...

असत्य पर सत्य के जय का संदेश, देता यह त्योहार,
श्रीराम अयोध्या लौटे थे, असुर रावण का कर संहार।
घर-घर दीप जले घी के, सजे थे अनुपम वंदनवार,
इस दिन समुद्र मंथन से, लक्ष्मी ने लिया था अवतार।
सजती हैं बिजली की लड़ियाँ, बच्चे फुलझड़ियाँ चलाएं,
अंधकार को दूर भगाकर, जग को हम रोशन कर जाएं।
अबकी बरस हम सब मिलजुलकर ऐसी दीवाली मनाएं...